लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

चैत्र कृष्ण पक्ष षष्ठी, 09.17 उपरांत सप्तमी विक्रम संवत 2079

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण अखबार

वर्ष 4, अंक 116, पृष्ठ 16, मूल्यः 6 रुपये

बरेली, सोमवार, 13 मार्च 2023

Page No : 08 TOP

साहिबा बेवफा नहीं थी, बस सही-गलत तय नहीं कर पाई

कार्यालय संवाददाता, बरेली

प्रेम कहानी

- एसआरएमएस रिद्धिमा में रूबरू थिएटर की ओर से नाटक का मंचन
- डॉ. शशि सहगल लिखित नाटक का काजल सूरी ने किया निर्देशन

अमृत विचार : एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को नई दिल्ली के रूबरू थिएटर की ओर से संगीतमय नाटक मिर्जा साहिबा का मंचन किया गया। डॉ. शशि सहगल लिखित और काजल सूरी निर्देशित नाटक मिर्जा साहिबा की प्रेम कहानी पर आधारित है।

मिर्जा और साहिबा की दोनों बचपन से एक साथ खेल कूद कर बड़े होते हैं। यह साथ जवानी तक पहुंचते-पहुंचते मोहब्बत में बदल गया, लेकिन साहिबा के अब्बू और भाइयों को ये रिश्ता किसी कीमत पर मंजूर नहीं होता है। इसलिए वह साहिबा की शादी कहीं और तय कर देते हैं। इसकी जानकारी मिर्जा को होती है तो वह घोड़े पर बैठकर आता है और साहिबा को भगा ले जाता है। घर से काफी दूर निकल कर दोनों एक जगह आराम करने के लिए रुकते हैं। एक पेड़ की छांव में मिर्जा कुछ देर को सो जाता है। इसी बीच साहिबा के भाई वहां आ जाते हैं। वह अपने भाइयों को बचाने के लिए मिर्जा के सारे तीर तोड़ देती है। उसे पता होता है कि मिर्जा के तीरों के सामने उसके भाई नहीं टिकेंगे और वह अपने भाइयों को प्यार के लिए मना लेगी। तभी साहिबा के भाई, मिर्जा और साहिबा को घेर कर हमला कर देते हैं। मिर्जा अपने तीर उठाता है, मगर सारे तीर टूटे मिलते हैं।

वो समझ गया कि ये साहिबा का काम है। मिर्जा मौत के घाट उतार दिया गया। साहिबा उसकी मौत बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने खुद को मार लिया। साहिबा बेवफा नहीं थी, बस वो सही गलत तय ना कर पाई।

इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देवमूर्ति, आदित्य मूर्ति, आशा मूर्ति, ऋचा मूर्ति, डॉ. अनुज कुमार सहित तमाम गणमान्य लोग उपस्थित रहे।